पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

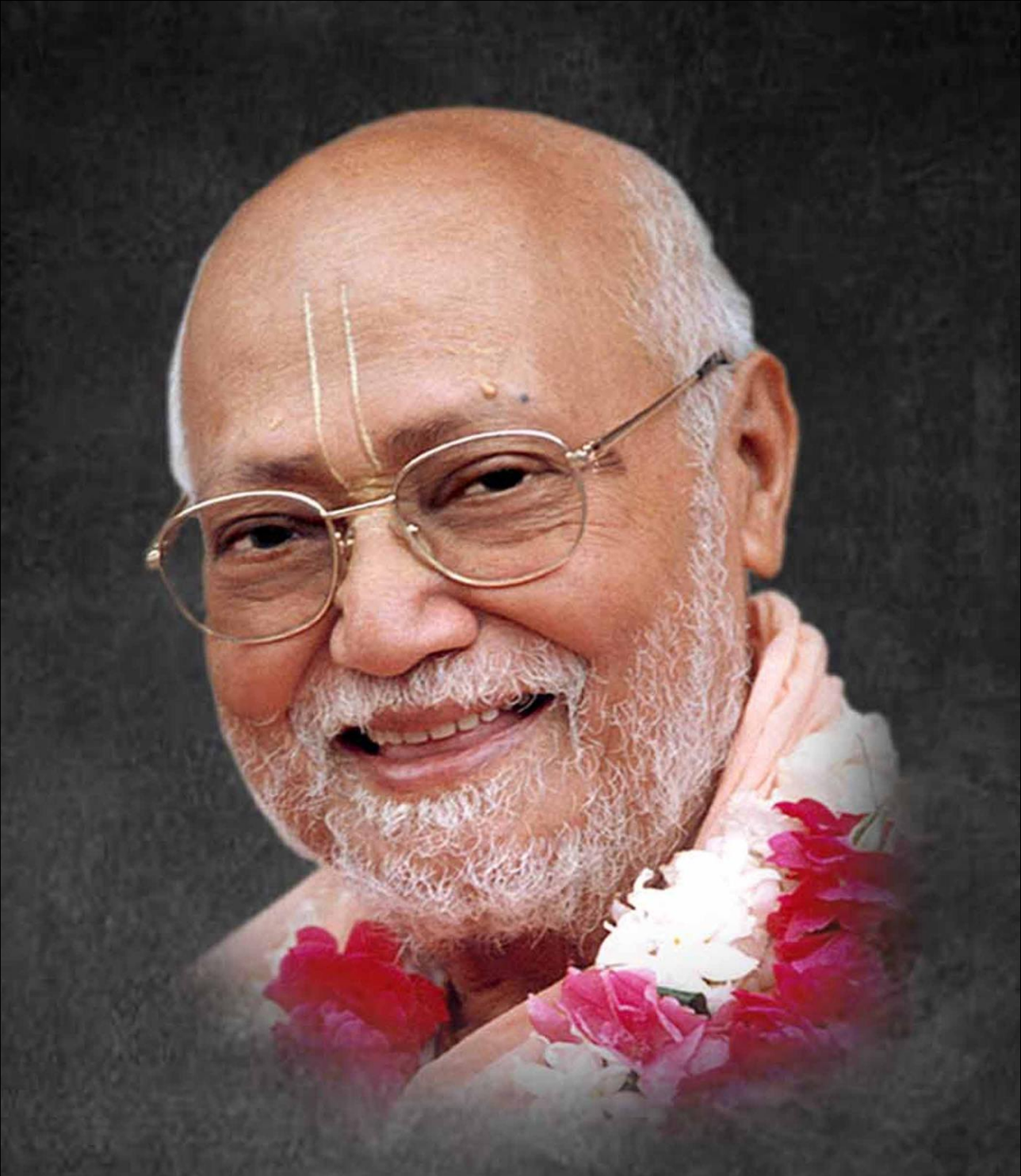

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 20

श्रील गुरुदेव जी ने श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की माध्यान्हिक लीला भूमि श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान में मूल मठ संस्थापन किया है।

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी ने ईशोद्यान* को राधाकुण्ड के रूप से दर्शन किया तथा कहा कि 'सर्वदा भजन स्थान हउक आमार' अर्थात यह मेरी हमेशा की भजन-स्थली बन जाए

मायापुर-दक्षिणांशे जाहन्वीर तटे ।
सरस्वती संगमेर अतीव निकटे ॥
इशोधान नाम उपवन सुविस्तार ।
सर्वदा भजनस्थान हउक आमार ||
ये वने आमार प्रभु श्रीराचीनन्दन ।

मध्यान्हे करेन लीला लये भक्तजन

॥

वनशोभा हेरि, राधाकुण्ड पड़े मने ।

से सब स्फूरूक सदा आमार नयने

॥

वनस्पति कृष्णलता निविड़ दर्शन |

नाना पक्षी गाय तथा गौर गुणगान ॥

सरोवर श्रीमन्दिर अति शोभा ताय

हिरण्य- हीरक नील-पीत-मणि भाय

॥

बहिर्मुख जन माया-मुग्ध आँखिद्वये ।

कभु नाहि देखे सेइ उपवनचये ॥

देखे मात्र कन्टक-आवृत भूमिखण्ड

।

तटिनी-वन्यार वेगे सदा लण्डभण्ड

॥

- श्रीनवद्वीप प्रभास तरंग

नवद्वीप के श्रीचैतन्य सारस्वत मठ के अध्यक्ष, परम पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति रक्षक श्रीधर देव गोस्वामी महाराज जी ने श्रीधाम मायापुर में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के मूल मठ के संस्थापन से पहले ही सरस्वती नदी के घाट के पास ही एक बड़ा साइनबोर्ड टंगाकर शास्त्रों में दर्शाये गंगा-सरस्वती संगम के नज़दीक ही

'ईशोद्यान' और उसकी महिमा को उस पर लिखकर प्रचार किया था। किन्तु बाद में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान और श्रीगौड़ीय संघादि के वहाँ संस्थापित होने से इस स्थान की महिमा का व्यापक भाव से सर्वत्र प्रचार होने लगा, जो कि कुछ ईर्ष्यालु व्यक्तियों को सहन नहीं हुआ। अतः उन्होंने उस साइनबोर्ड को हटा दिया तथा इस प्रकार का प्रचार करने लगे कि ये स्थान ईशोद्यान नहीं है, ये तो हुलोरघाट है। यही नहीं, प्रशासन के लोगों को भी समझा-बुझाकर रास्ते की दूरी बतलाने वाले मील के पत्थर पर

'हुलोरघाट' लिखवा दिया। गवर्मेन्ट पोस्ट और टेलीग्राफ डिपार्टमेन्ट में जाकर उन्होंने यह भी चेष्टा की कि 'ईशोद्यान' के नाम से पोस्ट आफिस से कोई भी पत्र न आये और न जाये। सरकार की ओर से कुछ जिम्मेदार व्यक्ति इसकी जांच-पड़ताल के लिये मायापुर श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ तथा सतीश मुखर्जी रोड पर स्थित कोलकाता में भी आये । श्रील गुरुदेव जी से उन्होंने सभी विषयों पर चर्चा करके यह निश्चय किया कि श्रीमायापुर में जिस स्थान पर श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ की प्रतिष्ठा हुई है वही 'ईशोद्यान' है तथा उसके

बाद उन्होंने मात्सर्यपरायण व्यक्तियों की बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी ने श्रीनवद्वीप धाम महात्म्य में लिखा है- 'भागीरथीर पूर्वतीरे हय मायापुर' । 'मायापुर - श्रीपुलिन मध्ये भागीरथी ।' - इत्यादि प्रमाणों के द्वारा स्पष्ट रूप से निर्देशित हुआ है कि मायापुर और नवद्वीप के बीच में भागीरथी नदी है। भागीरथी के पूर्वपार में मायापुर को छोड़कर कुछ भी नहीं है। मायापुर की महिमा को ही कम करना होता है। 'पुलिन' शब्द

से निर्देशित होता है- वर्तमान शहर नवद्वीप |

सन् 1964 शनिवार 21 मार्च से 29 मार्च रविवार तक श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में श्रीनवद्वीपधामपरिक्रमा और गौर-जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में नौ दिन का एक विराटधर्मानुष्ठान हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रील गुरुदेव जी ने की। इस अनुष्ठान के सातवें दिन के अधिवेशन में श्रीगौराविर्भाव-अधिवास-तिथि के दिन उत्तर प्रदेश के महामान्य गवर्नर, श्रीविश्वनाथ

दास महोदय अपने संगी-साथियों के साथ आये। मठ में आकर पहले उन्होंने सारा मठ घूम-घूम कर देखा, उसके बाद श्रीविग्रहों के दर्शन किये तथा श्रीविग्रहों के दर्शन के बाद उन्होंने सभा में बैठकर भाषण भी दिया। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा- श्रीधाम मायापुर का पवित्र शान्त परिवेश देखकर मैं बहुत ही आकृष्ट हुआ हूँ। श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर जी के निजजन अदम्य उत्साह के साथ सारे विश्व में श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की वाणी का प्रचार कर रहे हैं, जो कि अति

प्रशंसनीय है।' इस सभा में नदिया जिले के मैजिस्ट्रेट, श्री देवव्रत वन्द्योपाध्याय, आई.ए.एस. भी उपस्थित थे। श्रीमठ की ओर से महामान्य गवर्नर महोदय को जो अभिनन्दन पत्र दिया गया, उसका श्रील गुरुदेव जी के निर्देशानुसार त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी ने पाठ किया। गवर्नर के साथ श्रील गुरुदेव जी का कुछ क्षण के लिये हृदयतापूर्ण वार्तालाप भी हुआ। गवर्नर ने श्रील गुरुदेव जी को पुरी से लाया श्रीजगन्नाथ जी का प्रसाद भी दिया। दैनिक युगान्तर पत्रिका में 3

अप्रैल शुक्रवार को एवं आनन्द बाज़ार पत्रिका में (28 अप्रैल शुक्रवार को) यह संवाद प्रकाशित हुआ था।

सन् 1978 तक श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में हर साल श्रीनवद्वीपधाम परिक्रमा, श्रीगौरजन्मोत्सव और श्रीचैतन्यवाणी प्रचारिणी सभा की बैठक आदि श्रीधाम मायापुर-ईशोद्यान स्थित मठ में यथारीति भाव से महासमारोह के रूप में सुसम्पन्न होते रहे। श्रील गुरुदेव जी द्वारा श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान

की वेस्ट बंगाल सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट (Act XXVI of 1961) के अनुसार रजिस्ट्री होने के बाद उनके प्रकटकाल में श्रीमायापुर- ईशोद्यान में गौर पूर्णिमा तिथि के दिन 1977 और 1978 में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ की वार्षिक साधारण सभाएँ उनके सभापतित्त्व में सम्पन्न हुई।

श्रील गुरुदेव जी के प्रकटकाल में नया दो मन्ज़िला अतिथि भवन व तीन ऊपर और तीन नीचे के कमरे भक्तों द्वारा दी गई सेवा से ही बने। उनके प्रकटकाल में पहले वाला

तालाब भी प्रकाशित हुआ था। श्रील गुरुदेव जी की अभिलाषा थी कि इस तालाब के चारों ओर अष्ट सखी के घाट भी प्रकाशित हों। सन् 1959 में श्रील गुरुदेव जी ने श्रीमायापुरईशोद्यान में धर्मार्थ चिकित्सालय और श्रीसिद्धान्त सरस्वती प्राथमिक विद्यालय भी स्थापित किया।

श्रीलगुरुदेव